

रॉबर्ट वानॉय , पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 5

उत्पत्ति 1 और परमेश्वर, उत्पत्ति 1:1-2

सी। ईश्वर ब्रह्मांड का सर्वशक्तिमान निर्माता है

मेरा मानना है कि मैंने उस संबंध में अभी दो बातें कही थीं। सबसे पहले ईश्वर का अस्तित्व माना जाता है। दूसरा एकेश्वरवाद पूर्वकल्पित है और उसी अर्थ में इसकी शिक्षा दी गयी। और फिर हमने ईश्वर के लिए संज्ञा के बहुवचन रूप पर कुछ चर्चा की (एलोहीम, " आईएम " का अंत हिब्रू में बहुवचन अंत है) लेकिन यह निश्चित रूप से बहुदेववाद का संकेत नहीं है और शायद देवता में बहुलता भी नहीं है बल्कि महिमा का बहुवचन.

चलिए सी पर चलते हैं। ईश्वर ब्रह्मांड का सर्वशक्तिमान निर्माता है। यह निश्चित रूप से उत्पत्ति अध्याय एक में स्पष्ट रूप से सामने लाया गया है। ईश्वर ब्रह्मांड का सर्वशक्तिमान निर्माता है। उस अध्याय में आपके पास दोहराई गई अभिव्यक्ति है "और भगवान ने कहा, और भगवान ने कहा, और भगवान ने कहा।" वह कई रचनात्मक कृत्यों के संबंध में बोलते हैं। अतः ईश्वर ब्रह्मांड का सर्वशक्तिमान निर्माता है। इब्रानी 11:3 कहता है, "ब्रह्माण्ड का निर्माण परमेश्वर के आदेश पर हुआ।" निश्चित रूप से यह उत्पत्ति 1 की शिक्षा में भी प्रतिबिंबित होता है।

डी। ईश्वर अपनी रचना से अलग है ठीक है डी। ईश्वर अपनी रचना से पृथक है। पुराने नियम में सर्वेश्वरवाद का कोई संकेत नहीं है जहां देवता की पहचान सृजित व्यवस्था से की जाती है। उत्पत्ति 1-3 और पुराने नियम का ईश्वर प्रकृति देवता नहीं है। वह अलग है, वह अपनी रचना से अलग है और यह बाइबिल की सामग्री को प्राचीन निकट पूर्व की समकालीन पौराणिक सामग्री से अलग करता है। अतः ईश्वर अपनी रचना से पृथक है। जी. अर्न्स्ट राइट ने अपने दपेज 21 पर *गॉड हू एक्ट्स कहता है। मेरा मानना है कि यह आपकी ग्रंथ सूची में है।* यह चौथी प्रविष्टि के बारे में पृष्ठ 6 पर है। जी. अर्न्स्ट राइट *ईश्वर जो कार्य करता है।* पृष्ठ 21 पर वह कहता है, "यहाँ सभी प्राकृतिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक धर्म के देवताओं से बिल्कुल अलग भगवान है। वह कोई आसन्न शक्ति नहीं है, न तो प्रकृति में और न ही होने और बनने की प्राकृतिक प्रक्रिया में। उनके अस्तित्व की

प्रकृति उनके ऐतिहासिक कृत्यों में प्रकट होती है। इस प्रकार वह प्रकृति को पार कर जाता है जैसे वह इतिहास को पार कर जाता है और परिणामस्वरूप वह बुतपरस्त धर्म के पूरे आधार को नष्ट कर देता है। दुनिया में कोई भी शक्ति या शक्ति किसी अन्य की तुलना में उसके लिए अधिक विशिष्ट नहीं है और आज यह तेजी से समझा जा रहा है कि पूर्व पहचान एक पहाड़ी देवता, एक उर्वरता देवता, एक युद्ध देवता की प्रारंभिक इज़राइल में थी, जहां से भविष्यवक्ताओं का नैतिक एकेश्वरवाद धीरे-धीरे शुरू हुआ। विकसित विद्वतापूर्ण पूर्वधारणा और कल्पना की उपज हैं। किसी भी अनुभवजन्य आधार पर यह समझना असंभव है कि इस्राएल का ईश्वर बहुदेववाद से कैसे विकसित हुआ होगा। वह अद्वितीय है, *एकदम अलग, एकदम अलग।*” मुझे लगता है कि यह देवता की विशिष्टता का एक बहुत अच्छा बयान है जिसका वर्णन पुराने नियम में और विशेष रूप से यहां उत्पत्ति 1 में भी किया गया है। मुझे लगता है कि मैंने जिन चार चीजों का उल्लेख किया है: उसके अस्तित्व की कल्पना की गई है, एकेश्वरवाद की परिकल्पना की गई है, वह सर्वशक्तिमान निर्माता है ब्रह्माण्ड का और वह उस सृष्टि से अलग है। वे तत्व मिलकर एक अद्वितीय, बहुत उच्च ईश्वर अवधारणा देते हैं जो पुराने नियम के बाकी हिस्सों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

2. ब्रह्माण्ड के बारे में सामान्य शिक्षाएँ a. ब्रह्माण्ड स्वयंभू या दिव्य नहीं है। यह स्वाभाविक रूप से बुराई या ईश्वर और मनुष्य के प्रति विरोधी नहीं है आइए 2 पर चलते हैं: "ब्रह्मांड के बारे में सामान्य शिक्षाएँ।" मैं तीन टिप्पणियों के साथ शुरुआत करूंगा जो मुझे लगता है कि एक साथ लेने पर ब्रह्मांड के संबंध में महत्वपूर्ण हैं। एक। "ब्रह्माण्ड स्वयंभू या दिव्य नहीं है।" दूसरे शब्दों में, ब्रह्मांड ईश्वर के सार का विस्तार नहीं है। अतः ईश्वर और निर्मित ब्रह्माण्ड के बीच अंतर है। यह स्वयंभू नहीं है और यह दिव्य नहीं है। बी। "यह स्वाभाविक रूप से ईश्वर और मनुष्य के लिए बुरा या विरोधी नहीं है।" और, निश्चित रूप से, आप पाते हैं कि विशिष्ट रचनात्मक कृत्यों के बाद उत्पत्ति में भी दोहराए गए वाक्यांश में जहां आप पढ़ते हैं, "और भगवान ने देखा कि यह अच्छा था, यह अच्छा था, यह अच्छा था, यह अच्छा था।" अतः निर्मित व्यवस्था का आवश्यक चरित्र अच्छा है। ऐसे कई दर्शन और धर्म हैं जो मानते हैं कि पदार्थ मूल रूप से बुरा है और वे पदार्थ और आत्मा के बीच उस विरोधाभास को मानते हैं कि पदार्थ बुरा है। यह बाइबल की अवधारणा नहीं है। बेशक, पतन से

सृष्टि प्रभावित होती है, लेकिन यह स्वाभाविक रूप से बुरी नहीं है। निर्मित व्यवस्था सुखदायक एवं उत्तम है।

सी। ब्रह्माण्ड ईश्वरीय निर्माता की इच्छा से अस्तित्व में आया

। इसका गठन क्रमबद्ध चरणों का पालन करता है सी।, "ब्रह्मांड दिव्य निर्माता की इच्छा पर अस्तित्व में आया।" क्योंकि यह स्वयं-अस्तित्व या दिव्य नहीं है, बल्कि यह दिव्य निर्माता की इच्छा से अस्तित्व में आता है। ईश्वर इसे प्रकट करता है, वह इन रचनात्मक शब्दों को बोलता है और यह अस्तित्व में आता है। और डी. "इसका गठन क्रमबद्ध चरणों का पालन करता है।" हम रचनात्मक गतिविधि के छह दिनों में अध्याय 1 में इसका वर्णन पाते हैं। इसका गठन क्रमबद्ध चरणों के बाद हुआ। इसलिए मुझे लगता है कि यह ब्रह्मांड के बारे में सामान्य शिक्षण का एक सारांश है। हम उत्पत्ति 1 की अधिक विशिष्टताओं को देखने जा रहे हैं लेकिन यह निश्चित रूप से कुछ सामान्य शिक्षाएँ हैं।

3. उत्पत्ति 1-2 की मनुष्य के बारे में सामान्य शिक्षा। ब्रह्माण्ड की तरह ही, मनुष्य भी स्वयंभू या दिव्य नहीं है। मनुष्य अपने अस्तित्व का श्रेय ईश्वर के रचनात्मक कार्य को देता है c. मनुष्य ईश्वर के रचनात्मक कृत्यों की परिणति के रूप में आता है। मनुष्य ईश्वर की बाकी सभी रचनाओं से अलग है तीसरा, मनुष्य के बारे में उत्पत्ति 1-2 की सामान्य शिक्षा। पहला, ब्रह्माण्ड की तरह ही, मनुष्य भी स्वयंभू या दिव्य नहीं है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसे ईश्वर ने इतिहास में एक विशेष समय पर बनाया है और वह ईश्वर से अलग है। बी। मनुष्य का अस्तित्व ईश्वर के रचनात्मक कार्य के कारण है। बेशक, हम उत्पत्ति 1 और 2 के विकासवादी सिद्धांत के संबंध में बाद में इस पर चर्चा करेंगे। मुझे नहीं लगता कि आप उत्पत्ति 1 और 2 को किसी भी तरह से उत्पत्ति के विकासवादी दृष्टिकोण में समायोजित कर सकते हैं। सी। मनुष्य ईश्वर के रचनात्मक कृत्यों की परिणति के रूप में आता है। उत्पत्ति 1 चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है और छठे दिन अन्य रचनात्मक गतिविधियों के अंत में भगवान पुरुष और महिला की रचना करते हैं। अतः मनुष्य ईश्वर के रचनात्मक कृत्यों की परिणति के रूप में

आता है। डी। मनुष्य ईश्वर की बाकी सभी रचनाओं से अलग है क्योंकि वह ईश्वर की छवि और समानता में बनाया गया था। फिर भी, एक निश्चित बिंदु पर मनुष्य एक प्राणी होने के नाते जो कि ईश्वर की रचना का हिस्सा है, शेष सृष्टि के साथ विशेषताओं को साझा करता है। लेकिन वह इस मायने में भी विशिष्ट है कि उसके पास कुछ ऐसा है जो किसी अन्य प्राणी के पास नहीं है, और वह है ईश्वर की छवि। हम उत्पत्ति 1:26-27 में पाते हैं। "परमेश्वर ने कहा, 'आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।'" और 1:27 बताता है, "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार उसने उसे उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने उन्हें उत्पन्न किया।" मुझे लगता है कि आपको इस बात पर लंबी चर्चा मिलेगी कि मनुष्य में भगवान की छवि क्या है, इसका गठन क्या है, लेकिन मैं इस बिंदु पर ऐसा नहीं करना चाहता। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि मनुष्य एक आध्यात्मिक, तर्कसंगत और नैतिक प्राणी है और यह मनुष्य को जानवरों से अलग करता है - वह भगवान की छवि में बनाया गया है।

इ। मनुष्य के पास पशु सृष्टि पर दैवीय अधिकार या प्रभुत्व है और उसे पृथ्वी को अपने अधीन करने का अधिकार दिया गया है

इ। , "मनुष्य के पास पशु सृष्टि पर दैवीय अधिकार या प्रभुत्व है और उसे पृथ्वी को अपने अधीन करने का कार्य दिया गया है।" वह उत्पत्ति 1:28 में है, "परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी, और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ; इसे वश में करो. और समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" इसलिए मुझे लगता है कि ये शिक्षाएं मिलकर मानव जाति के संबंध में उत्पत्ति 1 में जो कुछ भी पाती हैं उसका सारांश प्रस्तुत करती हैं। वह स्वयंभू या दिव्य नहीं है, वह वह है जिसका अस्तित्व ईश्वर के रचनात्मक कार्य के कारण है, वह ईश्वर के रचनात्मक कार्यों की परिणति के रूप में आता है, वह छवि के कारण ईश्वर की बाकी रचना से अलग है, और उसके पास अधिकार है जानवरों पर प्रभुत्व और पृथ्वी को अपने अधीन करने के लिए।

4. उत्पत्ति 1:1 की व्याख्याएँ ठीक है, आइए 4 पर चलते हैं। "उत्पत्ति 1:1 की व्याख्याएँ।" मैं पहले

ही उल्लेख कर चुका हूँ कि उत्पत्ति 1:1 एक शानदार कथन है, जिसका उस समय के बाइबिल से परे साहित्य में कोई समानता नहीं है। “आदि में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।” अब मैंने किंग जेम्स से पढ़ा है, एनआईवी वही है, सिवाय इसके कि “स्वर्ग” बहुवचन है। “शुरुआत में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।” यदि आप प्राचीन संस्करणों को देखें, तो न्यू टेस्टामेंट के हिब्रू के प्राचीन अनुवाद में आपको एक समान प्रतिपादन मिलता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आपको एक ऐसा प्रतिपादन मिलता है जो उत्पत्ति 1:1 को एक स्वतंत्र उपवाक्य बनाता है - एक अवधि के साथ एक वाक्य। आज आप ढेर सारी टिप्पणियाँ और कुछ अनुवाद देखेंगे तो पाएंगे कि यह एक स्वतंत्र उपवाक्य के बजाय एक अधीनस्थ उपवाक्य है। उदाहरण के लिए, यदि आप आरएसवी लेते हैं, तो यह इसका अनुवाद करता है, “आरंभ में भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया” जैसा कि किंग जेम्स करते हैं, लेकिन इसमें एक फुटनोट है। फुटनोट में लिखा है: “जब भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण करना शुरू किया, तो पृथ्वी बिना आकार की थी” आदि ... यह इसे निम्नलिखित के लिए एक अधीनस्थ उपवाक्य बनाता है। नई अंग्रेजी बाइबिल में कोई फुटनोट नहीं है। यह सिर्फ इस वाक्यांश का अनुवाद करता है, “सृष्टि की शुरुआत में, जब भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाई, तो पृथ्वी आकारहीन और शून्य थी।” यह फिर से श्लोक एक को श्लोक दो के अधीन कर देता है। इसलिए खूब चर्चा हो रही है, खासकर टिप्पणियों में। क्या उत्पत्ति 1:1 को एक स्वतंत्र खंड के रूप में - एक कथन के रूप में लिया जाना चाहिए? या, क्या इसे निम्नलिखित के अधीनस्थ उपवाक्य के रूप में लिया जाना चाहिए? सबसे अच्छा अनुवाद कौन सा है? मैं कहूंगा, व्याकरणिक रूप से, आप दोनों में से किसी एक के लिए मामला बना सकते हैं। दूसरे शब्दों में, इसमें कुछ व्याकरण संबंधी अस्पष्टताएँ हैं, इसलिए आप इस पर आगे-पीछे बहस कर सकते हैं।

एक। उत्पत्ति 1:1 को एक स्वतंत्र खंड के रूप में लिया गया है तो आइए 4 के तहत इस पर थोड़ी और चर्चा करें। मैं आपको कुछ उप-बिंदु दूंगा जो आपकी रूपरेखा पत्रक पर नहीं हैं। एक। है: “उत्पत्ति 1:1 को एक स्वतंत्र खंड के रूप में लिया गया है।” मुझे लगता है कि इसे समझने का यह सबसे अच्छा तरीका है। वह अभी भी कुछ प्रश्नों का उत्तर नहीं देता है, अर्थात्, आप एक स्वतंत्र खंड के रूप में कथन के महत्व की व्याख्या कैसे करते हैं? इसका कार्य क्या है? और मुझे लगता है

कि एक स्वतंत्र उपवाक्य के रूप में कम से कम तीन संभावित व्याख्याएँ हैं। पहला यह होगा कि यह पूरे अध्याय का सारांश है। "शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी की रचना की," पूरे अध्याय का सारांश है। दूसरे शब्दों में, यह काफी हद तक अखबार की हेडलाइन या निबंध में मुख्य वाक्य जैसा होगा। यह एक प्रकार से पालन की जाने वाली हर चीज़ का सारांश प्रस्तुत करता है। अब, उस व्याख्या के लिए बहुत कुछ कहा जाना बाकी है। असल में मैं अभी एनआईवी अध्ययन बाइबिल में गया था, और उत्पत्ति 1:1 पर नोट कहता है: "रचनात्मक गतिविधि के 6 दिनों का परिचय देने वाला एक सारांश विवरण।" यही व्याख्या है कि एनआईवी इसे लेता है। उस दृष्टिकोण के साथ समस्या यह है - और इन सभी विचारों में कुछ समस्याएं हैं, इसीलिए अलग-अलग विचार हैं - श्लोक 2 सृष्टि की कहानी की उपयुक्त शुरुआत की तरह प्रतीत नहीं होता है। यदि श्लोक 1 केवल शीर्षक है, तो श्लोक 2 सृष्टि की कहानी की उपयुक्त शुरुआत नहीं लगता, बल्कि यह अव्यवस्थित निर्मित पदार्थ की स्थिति को बताता है। "पृथ्वी निराकार या शून्य थी, गहरे जल पर अंधकार छा गया था।" सृष्टि वृत्तांत की शुरुआत "पृथ्वी निराकार और खाली थी " से करना थोड़ा अजीब लगेगा। लेकिन, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आप 1:1 को एक स्वतंत्र खंड के रूप में नहीं ले सकते। हालाँकि मुझे ऐसा लगता है कि यदि आप इसे एक स्वतंत्र खंड के रूप में लेते हैं, तो इसे सृजन *पूर्व निहिलो के रूप में समझना सबसे अच्छा होगा*, मैं इस शब्द का उपयोग करूँगा क्योंकि यह बाद में सामने आएगा। यह एक लैटिन वाक्यांश है जिसका प्रयोग अक्सर "शून्य से", "शून्य से सृजन" के रूप में किया जाता है। क्रिएशन *एक्स निहिलो*, शून्य से निर्माण है। यह दृष्टिकोण समझता है, "शुरुआत में, भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया," आदेशित ब्रह्मांड की *पूर्व निहिलो रचना के संदर्भ के रूप में* श्लोक 2 में वर्णित असंरचित पदार्थ का संदर्भ नहीं है। और यदि ऐसा है, तो, सृष्टि का विवरण वास्तव में श्लोक 3 में शुरू होता है: "और भगवान ने कहा कि प्रकाश हो..." इत्यादि। श्लोक 2 भगवान के बोलने से पहले की दुनिया की स्थिति देगा, और फिर पहले से मौजूद पदार्थ के किसी भी विचार को हटाने के लिए आप कहेंगे कि श्लोक 1 प्रस्तावना है। यह सृष्टि *पूर्व निहिलो* के अर्थ में संपूर्ण चीज़ की बात करता है। अब, यह श्लोक 3 से श्लोक 1 की ओर वापस जाने जैसा है, लेकिन मुझे लगता है कि हम इसके लिए एक बहुत अच्छा मामला बना सकते हैं। यदि यह मामला है, तो आप पद 1 को *शून्य से सृजन और शून्य से सृजन* के अर्थ में पूरे अध्याय का सारांश समझेंगे ,

और "आकाश और पृथ्वी" संरचित, व्यवस्थित ब्रह्मांड को संदर्भित करेगा।

उत्पत्ति 1:2 "था" या "बन गया" दूसरा तरीका जो इसे लिया गया है, उत्पत्ति 1:1 को एक मूल रचना को संदर्भित करने के लिए समझना है, "आरंभ में भगवान ने आकाश और पृथ्वी की रचना की," एक मूल रचना वह सुंदरता और व्यवस्था में से एक था, लेकिन वह जो पद 2 से अलग और समय में बहुत दूर था। अब, जो मानता है वह यह है, "शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया," यहां एक सुंदर संपूर्ण रचना थी लेकिन फिर किसी चीज़ ने हस्तक्षेप किया। एक प्रलयकारी परिवर्तन हुआ। पद 2 में, आप पृथ्वी को पढ़ते हैं, जैसा कि राजा जेम्स कहते हैं, "था," आप अनुवाद करते हैं कि पृथ्वी " बिना आकार और शून्य हो गई और गहरे के ऊपर अंधकार छा गया।" तो यह दृष्टिकोण पद 1 और पद 2 के बीच प्रलयकारी परिवर्तन को मानता है। और आमतौर पर यह शैतान के पतन से जुड़ा है जिसके कारण ऐसा परिवर्तन हुआ। एक देवदूत था जिसने विद्रोह किया और अपनी मूल स्थिति से गिर गया, ब्रह्मांड को प्रभावित किया और अव्यवस्था फैला दी। इस दृष्टिकोण से, श्लोक 2 की स्थितियाँ ऐसी नहीं होंगी कि भगवान ने मूल रूप से चीजों को कैसे बनाया, बल्कि वे इस प्रलयकारी परिवर्तन के परिणाम हैं।

अब इस दृष्टिकोण के समर्थक श्लोक 2 में क्रिया की अपील करते हैं जिसका अनुवाद किंग जेम्स में "था" किया गया है। एनआईवी में इसका अनुवाद "था" भी किया गया है, हालांकि, एक नोट है जो कहता है: "संभवतः बन गया।" यदि आप हिब्रू ले रहे हैं तो यह एक बहुत ही परिचित बात है कि क्रिया, " *हयाह* " का अनुवाद या तो किया जा सकता है: "होना" या "बनना"। अब वह मौखिक रूप *हय* - होना या बनना - कई अर्थों में प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी इसका अर्थ "पूरा होना" होता है। कभी-कभी इसका अर्थ "अस्तित्व में आना" होता है। कभी-कभी इसका मतलब सिर्फ "अस्तित्व में होना" होता है। तो, मुझे लगता है कि आप शब्द से ही देख सकते हैं, इसका उपयोग कभी-कभी गतिशील अर्थ में "बनना" के रूप में किया जाता है, कभी-कभी केवल "होना" के स्थिर अर्थ में किया जाता है। यह संदर्भ पर निर्भर करता है कि इनमें से किसे प्राथमिकता दी जाए। मुझे नहीं लगता कि आप किसी एक या दूसरे दृष्टिकोण को साबित करने के लिए शब्द पर ही तर्क का आधार बना सकते हैं। कुछ लोग ऐसा करने का प्रयास करेंगे। कुछ लोग यह कहने का प्रयास करेंगे

कि हया हमेशा एक गतिशील प्रकार का विचार है, इसलिए इसका अनुवाद "बन गया" होना चाहिए। वे श्लोक 1 और श्लोक 2 के बीच प्रलयकारी परिवर्तन के विचार का समर्थन करने के लिए इसका उपयोग करने का प्रयास करते हैं। मुझे नहीं लगता कि उपयोग इसे सहन करेगा। मुझे नहीं लगता कि आप अपने तर्क को क्रिया के अर्थ पर आधारित कर सकते हैं क्योंकि यह दोनों तरह से होता है। और मैं इस दृष्टिकोण के संबंध में कहूंगा कि यह व्याकरणिक रूप से संभव है, हालांकि हया का उपयोग "बनने" के अर्थ में किया जा सकता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस दृष्टिकोण के लिए बहुत अधिक सबूत हैं। और इसका परिणाम यह हुआ कि शेष अध्याय वास्तव में कोई सृजन वृत्तांत नहीं है। शब्द के सही अर्थों में यह मनुष्य और जानवरों के निवास स्थान के रूप में पृथ्वी का पुनर्वास बन जाता है जब आप एक मूल, परिपूर्ण और सुंदर रचना की गिरावट को देखते हैं।

गैप थ्योरी को खारिज कर दिया गया - वेस्टन फील्ड्स आपकी रूपरेखा शीट पर, "III" के अंतर्गत। ए. 4." आपकी ग्रंथ सूची शीट पर, पृष्ठ के ठीक मध्य में, आपको वेस्टन डब्ल्यू. फ्रील्ड्स द्वारा एक प्रविष्टि दिखाई देती है: *अनफॉर्मर्ड और अनफ़िल्ड*। यह उत्पत्ति 1:1 और 1:2 की पुस्तक-लंबी चर्चा है। वेस्टन फील्ड्स 1:1 और 1:2 के बीच के अंतर के इस प्रलयकारी सिद्धांत के खिलाफ बहुत दृढ़ता से तर्क देते हैं। इसलिए यदि आप ईश्वर ने जो कहा उसकी पूरी चर्चा पढ़ने में रुचि रखते हैं तो आप गैप थ्योरी पर फील्ड की पुस्तक देख सकते हैं।

अब, मैं यहां अंतराल सिद्धांत पर एक टिप्पणी करना चाहता हूं। आप उस प्रश्न पर आते हैं जिसे हमने पिछली रूपरेखा में छुआ था, जब हम इन वंशावली पर चर्चा कर रहे थे : आप भूगर्भिक समय को कहाँ रखते हैं? वास्तव में केवल तीन ही स्थान हैं जहाँ आप इसे रख सकते हैं। मैं पीछे की ओर काम करूंगा. आप इसे बाढ़ में डाल सकते हैं, हमने इसके बारे में बात की, बाढ़ भूविज्ञान, भूगर्भिक समय में पृथ्वी में डाले गए सभी स्तर और फिर आप इसे उत्पत्ति 6-9 में डाल रहे होंगे। यदि आप "दिन" को 24 घंटे के सौर दिन के बजाय समय की अवधि के रूप में समझते हैं तो आप इसे उत्पत्ति 1 के दिनों में रख सकते हैं। यह एक और विकल्प है. हम उस पर बाद में चर्चा करेंगे जब हम उस तक पहुंचेंगे। या आप इसे उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच रख सकते हैं। ऐसी तीन जगहें

हैं जहां आप यह कर सकते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो भूगर्भिक समय की समस्या को हल करने के लिए, इस दृष्टिकोण को पसंद करते हैं क्योंकि तब वे उस सामग्री को उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच रख सकते हैं।

पुराने नियम में कई अन्य अनुच्छेद हैं जिन्हें शैतान के पतन के साथ इस संबंध का समर्थन करने के लिए उद्धृत किया गया है। मुझे लगता है कि समस्या यह है, और हम इनमें से प्रत्येक अनुच्छेद पर चर्चा करने में बहुत समय व्यतीत कर सकते हैं, समस्या इनमें से प्रत्येक अनुच्छेद में है जिसका उल्लेख किया गया है - यशायाह में कुछ है, यहजेकेल में कुछ है और यिर्मयाह में कुछ है - प्रत्येक इनकी अपनी व्याख्यात्मक समस्याएँ हैं। उनमें से अधिकांश के साथ, यह बहुत वास्तविक प्रश्न है कि क्या वे शैतान के बारे में भी बात कर रहे हैं या क्या वे यहजेकेल 28 में सौर के राजा के बारे में बात कर रहे हैं या यशायाह 14 में बेबीलोन के राजा के बारे में बात कर रहे हैं।

2. इसके साथ कोई वास्तविक संबंध स्थापित नहीं है उत्पत्ति 1:2 भले ही वे अंश शैतान के बारे में बात कर रहे हों

संख्या 2. “उत्पत्ति 1:2 के साथ कोई वास्तविक संबंध स्थापित नहीं हुआ है, भले ही वे अंश शैतान के बारे में बात कर रहे हों। तो आप इस स्थिति को स्थापित करने के लिए उन अंशों को इसमें जोड़ने के लिए कई अनुमान लगाते हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसका कोई पुख्ता सबूत है।

पदार्थ के निर्माण को संदर्भित करता है और संख्या 3 पर चलते हैं। तीसरी संभावना यह है कि यह कथन पदार्थ के निर्माण को संदर्भित करता है। “शुरुआत में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।” आप कह सकते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी ब्रह्मांड के निर्माण खंड हैं - पदार्थ, अपने कच्चे चरणों में। जीसीएच एल्डर्स यह विचार रखते हैं। एल्डर्स एक डच पुराने नियम के विद्वान थे जिन्होंने कई टिप्पणियाँ और अन्य लेख लिखे। उन्होंने जेनेसिस पर दो खंडों में एक टिप्पणी लिखी, जिसका हाल ही में अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और द बाइबल स्टूडेंट कमेंटरी श्रृंखला में जॉर्डरवन द्वारा प्रकाशित किया गया। मुझे नहीं पता कि आपने उसे देखा है या नहीं। ये पिछले 4 या 5 साल से सामने आ रहा है। पुराने नियम की टिप्पणी डच भाषा में प्रकाशित हुई थी। एल्डर्स ने सभी टिप्पणियाँ

नहीं लिखीं, लेकिन उन्होंने जेनेसिस लिखी और एल्डर्स द्वारा जेनेसिस पर उस टिप्पणी के खंड एक में, पृष्ठ 52, श्लोक एक पर कहते हैं, "यह सिर्फ एक शीर्षक नहीं है," उन्होंने पहले दृष्टिकोण को खारिज कर दिया। "यह भी संदेह से परे सच है कि स्वर्ग और पृथ्वी यहां वर्तमान संगठित ब्रह्मांड का उल्लेख नहीं करते हैं जैसा कि उत्पत्ति 1 के पूरा होने पर वर्णित उत्पत्ति कार्य के बाद दिखाई दिया था। ब्रह्माण्ड आज जो है वह कैसे बना, इसका श्लोक 3-31 में विस्तार से वर्णन किया गया है, श्लोक 1 में आकाश और पृथ्वी इस प्रकार विस्तृत गठन और क्रम से पहले दुनिया के सार का एक पदनाम हैं, जिसका वर्णन शेष में किया गया है। अध्याय। तब हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि श्लोक 1 में स्वर्ग और पृथ्वी ब्रह्मांड के पदार्थ को संदर्भित करते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि उत्पत्ति 1:1 उस पदार्थ का वर्णन करता है जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण हुआ। आप उस दृष्टिकोण से देखते हैं कि यह श्लोक 2 में बिल्कुल स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है। यदि आप "स्वर्ग और पृथ्वी" को समझते हैं, तो यह पदार्थ के लिए एक प्रकार का आलंकारिक पदनाम है, जो ब्रह्मांड के तत्वों का निर्माण खंड है। आप श्लोक 2 में उस समापन को देखते हैं जब पृथ्वी आकारहीन और शून्य, असंरचित और अव्यवस्थित है। और फिर जैसे-जैसे चीजें घटित होने लगती हैं, यह संरचित होना शुरू हो जाता है। तो यह भी एक संभावना है, इसके साथ समस्या यह है कि आपको "स्वर्ग और पृथ्वी" को कुछ हद तक आलंकारिक अर्थ में लेना होगा और आप आश्चर्य करेंगे, "क्या ऐसा किया जाना चाहिए?" लेकिन यह श्लोक 2 के साथ निरंतरता प्रदान करता है। इसलिए मुझे लगता है कि इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। मेरे लिए या तो पहला दृश्य, शीर्षक दृश्य या यह तीसरा दृश्य सबसे अधिक संभावित है। पद 2 में वह "पृथ्वी" क्या दर्शाती है? ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर द्वारा चीजों को व्यवस्थित करने से पहले अस्तित्व की किसी प्रकार की असंरचित स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि अध्याय 1 के शेष भाग में वर्णित है

। उत्पत्ति 1:1 एक अधीनस्थ खण्ड के रूप में -2 दृश्य

ठीक है बी. 4 के अंतर्गत, "उत्पत्ति 1:1 को एक स्वतंत्र खंड के रूप में लेना था।" मैंने आपको एक स्वतंत्र उपवाक्य के रूप में वाक्यांश की 3 व्याख्याएँ दीं। बी। उत्पत्ति 1:1 को एक अधीनस्थ उपवाक्य के रूप में लेना है। अब एक अधीनस्थ उपवाक्य के रूप में मूल रूप से 2

विचार हैं। एक पद को पद 2 के अधीन बना देगा और दूसरा इसे पद 3 के अधीन बना देगा, पद 2 एक कोष्ठक की तरह होगा।

पहला दृष्टिकोण यह है कि पद 1 पद 2 के अधीन है। अब इस चर्चा का पूरा कारण हिब्रू पाठ के पहले शब्द पर केंद्रित है जो *बेरे/शिट* "आरंभ में" है। आपमें से जिन लोगों ने हिब्रू भाषा नहीं सीखी है या यदि आपके पास हिब्रू भाषा नहीं है, तो मैं हिब्रू पर ध्यान नहीं देने जा रहा हूं, लेकिन सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि सवाल यह है कि क्या उस पहले शब्द को पूर्ण या निर्माण अवस्था में समझा जाना चाहिए . व्याकरणशास्त्री इसके बारे में बहस करते हैं और मैं इसके तकनीकी भाग में नहीं जाना चाहता। लेकिन मुझे लगता है कि दो विचार हैं जो दृढ़ता से यह समझने का समर्थन करते हैं कि यह पूर्ण है। यदि आप इसे निरपेक्ष के रूप में समझते हैं तो आप इसे एक स्वतंत्र उपवाक्य के रूप में लेंगे, "आरंभ में भगवान ने बनाया।" यदि आप इसे एक रचना के रूप में लेते हैं तो आप इसे एक अधीनस्थ उपवाक्य के रूप में लेंगे। अब, आपमें से जिन लोगों ने हिब्रू पढ़ी है वे निरपेक्ष और रचनात्मक अवस्थाओं के बारे में कुछ जानते हैं। यदि आपके पास हिब्रू नहीं है तो इसे हटा लें, जब आपके पास यह होगी, तो यह आपके लिए कुछ मायने रखेगा। यदि आप इसे कभी नहीं लेते हैं, तो आप केवल इस चर्चा से निकलने वाली बातों पर ध्यान दे सकते हैं।

ऐसी दो चीजें हैं जो निरपेक्षता का दृढ़ता से समर्थन करती हैं। पहला यह है कि मैसोरेटिक पाठ उच्चारण करते हैं, शब्द को विच्छेदात्मक उच्चारण के साथ उच्चारण करते हैं। यह एक मजबूत संकेत है कि मसोरावासी इसे निरपेक्ष समझते थे। निःसंदेह मसोरावासी बाद में 1000 ई.पू. के आसपास थे और उन्होंने एक विच्छेदात्मक उच्चारण के साथ उच्चारण किया जो इंगित करता है कि वे इसे निरपेक्ष के रूप में समझते थे। दूसरे, बिना किसी अपवाद के, जब प्राचीन संस्करण इसका अनुवाद करते हैं तो इसे पूर्ण मानते हैं। दूसरे शब्दों में, पुराने टेस्टामेंट, सिरिएक और सभी प्राचीन संस्करणों के सेप्टुआजेंट ग्रीक अनुवाद इसे बिना किसी अपवाद के पूर्ण रूप से समझते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि यह कोई निर्माण नहीं हो सकता, इसमें कुछ अस्पष्टता है - यह हो सकता है। लेकिन ऐसा लगता है कि साक्ष्य का महत्व पूर्णता के पक्ष में है।

उत्पत्ति 1:2 एक कोष्ठक के रूप में(?) अब जो लोग इसे एक निर्माण के रूप में लेते हैं और इसका

अनुवाद कुछ इस तरह करते हैं: "जब भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण करना शुरू किया," उनमें से अधिकांश ने इसे पद 2 के अधीन कर दिया: "जब भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण करना शुरू किया, वह गहरे अंधकार में था। हालाँकि, कुछ लोग कहेंगे कि श्लोक 2 एक कोष्ठक है और श्लोक 1 को पढ़ना चाहिए: "और जब भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण करना शुरू किया (पृथ्वी अब अंधकारमय और शून्य थी)" तब भगवान ने कहा..." आप देखिए, जब भगवान ने रचना शुरू की... फिर भगवान ने कहा। श्लोक 3, श्लोक 1 के कथन की निरंतरता है, जिसमें श्लोक 2 कोष्ठक के रूप में है। यह इसे काफी अजीब और जटिल बनाता है। हम उसे अगले एक घंटे में उठा लेंगे।

जोश कुल्प, जेम्स फ़लांका, एंजी सिकनी, ओवेन विलियम्स और द्वारा लिखित
 उनके संपादक अलेक्जेंड्रिया फ़्लोरेज़
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 राचेल एशली द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया